सरकंडों का बंडल

ईसप कथा

सरकंडों का बंडल

ईसप कथा

एक बार दलमार नाम का एक बुद्धिमान राजा था. राजा के पाँच पुत्र थे. राजा के बेटे आपस में हमेशा लड़ते रहते थे. वे कभी भी किसी एक बात पर सहमत नहीं होते थे!

राजकुमार दिन भर आपस में बहस करते रहते थे. उनमें से हर कोई मानता था कि वो सबसे अच्छा था. उनमें से प्रत्येक चाहता था कि उसे ही सबसे अच्छा मिले. उनमें से कोई भी एक-साथ मिलकर काम नहीं करना चाहता था. वो एक बड़ी समस्या थी.

नाश्ते में प्रिंस कोफी सबका ध्यान आकर्षित करना चाहता था. "इस बड़े मक्का के केक को देखो," उसने गर्व से कहा. "मैं इसे तीन कौर में खा जाऊंगा!"

"मेरा केक तुमसे बड़ा है!" राजकुमार कोजो चिल्लाया. "मैं इसे दो कौर में निगल जाऊंगा!"

प्रिंस क्वामे अपनी शाही कुर्सी पर वापस झुका. "मैं पहले ही तीन मक्का के केक खा चुका हूँ!" उसने अपने भाइयों पर हँसते हुए कहा.

राजकुमार किजानी गुस्से में लाल हो गया. "यह सही नहीं है!" वो चिल्लाया. "मेरा केक बहुत छोटा है."

"मेरा केक कहाँ है? वो अभी तो यहीं था!" राजकुमार कुमी चिल्लाया.

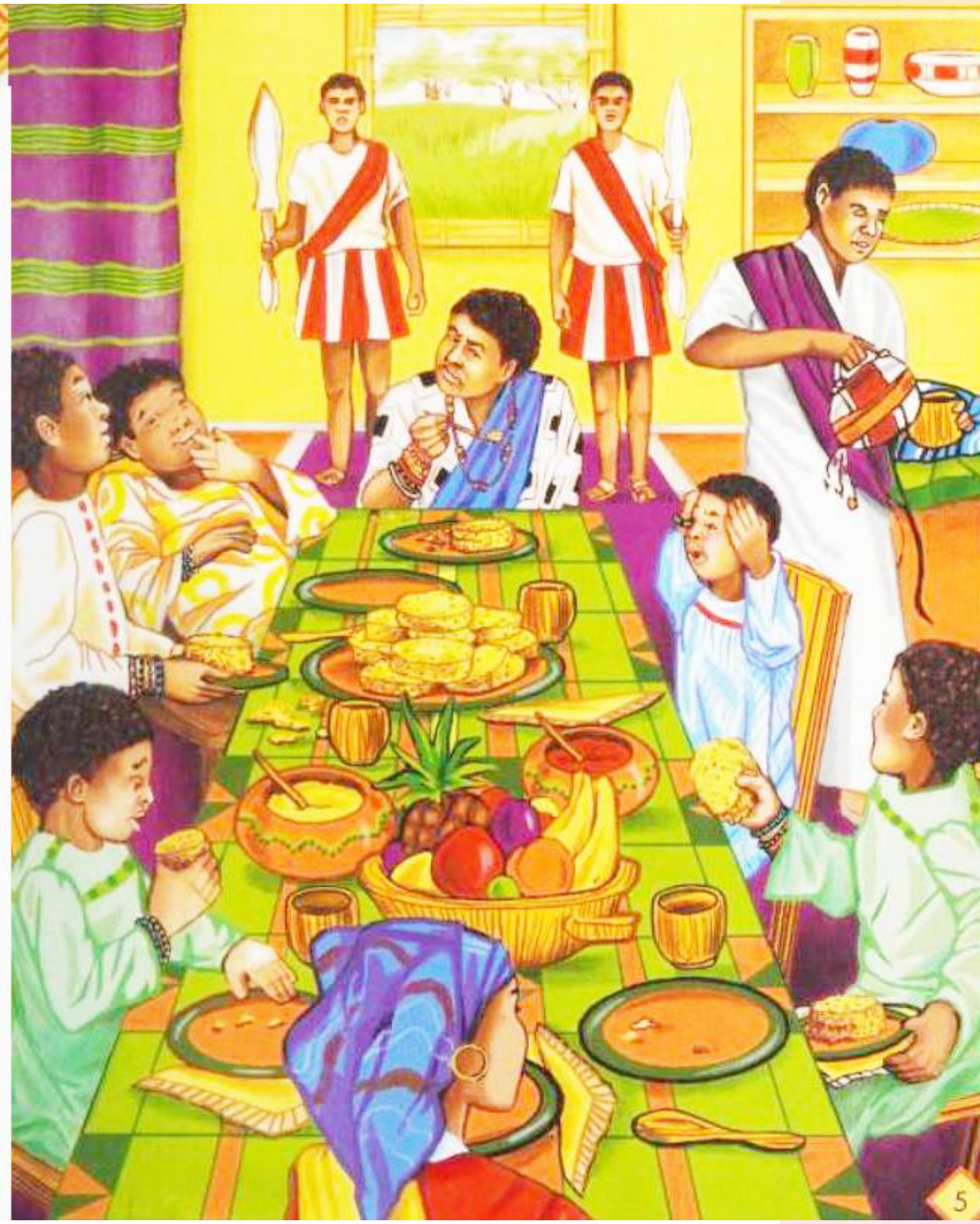

स्कूल के कमरे में, राजकुमार क्वामे अपने भाइयों को यह बताने के लिए इंतजार नहीं कर सकता था कि वो कितना स्मार्ट था.

"मुझे देखो!" उसने कहा. "मैं संख्याओं की किसी भी जोड़ी को, आप लोगों की तुलना में तेज़ी से जोड़ सकता हूँ."

"मैं कला में सबसे सर्वश्रेष्ठ हूँ!" राजकुमार किजानी चिल्लाया.

"पर मैं सबसे अच्छा लेखक हूं," प्रिंस कोफी ने कहा.

"मैं सबसे होशियार हूं क्योंकि मैं सबसे ज्यादा पढ़ता हूं," प्रिंस कुमी ने गर्व से कहा.

इससे प्रिंस कोजो नाराज हो गया. "तुमने गलत कहा? मैंने तुमसे ज्यादा पढ़ता हूं!" फिर वो ज़ोर से चिल्लाया.

राजा दलमार ने अपने बच्चों को देखा. "उन्हें किसी भी चीज़ में सर्वश्रेष्ठ बनने और निपुण होने का समय कब मिलेगा?" उन्होंने आश्चर्य किया. "मेरे बेटे अपना सारा समय लड़ने में ही बिताते हैं!"

फिर पूरा परिवार चाय के लिए शाही बगीचे में इकट्ठा हुआ. चाय के समय भी सभी राजकुमार आपस में लड़ते और चिल्लाते रहे. बगीचे के पक्षी भी उनकी लड़ाई सुन रहे थे. राजा दलमार और रानी मल्किया को लगा कि उन्हें अपने बेटों की लड़ाई को रोकने के लिए कुछ ज़रूर करना चाहिए.

रानी मल्किया ने राजा के कान में कुछ फुसफुसाया जिसे सुनकर राजा मुस्कुराए. चाय पीने से पहले उन्होंने अपने एक नौकर को बुलाया.

"बाहर घास के मैदान में जाओ," राजा दलमार ने आज्ञा दी. "और मेरे लिए सरकंडों का एक बंडल लाओ. मैं उनसे अपने बेटों को एक सबक सीखना चाहता हूँ."

राजकुमारों ने सब कुछ रोक दिया और वे सीढ़ियों पर बैठ गए. उन्हें नहीं पता था कि उनके पिता ने नौकर को सरकंडे लेने के लिए क्यों भेजा था, लेकिन इससे वे काफी चिंतित थे. वे चुपचाप बैठे सोचने लगे कि उनका सबक क्या होगा.

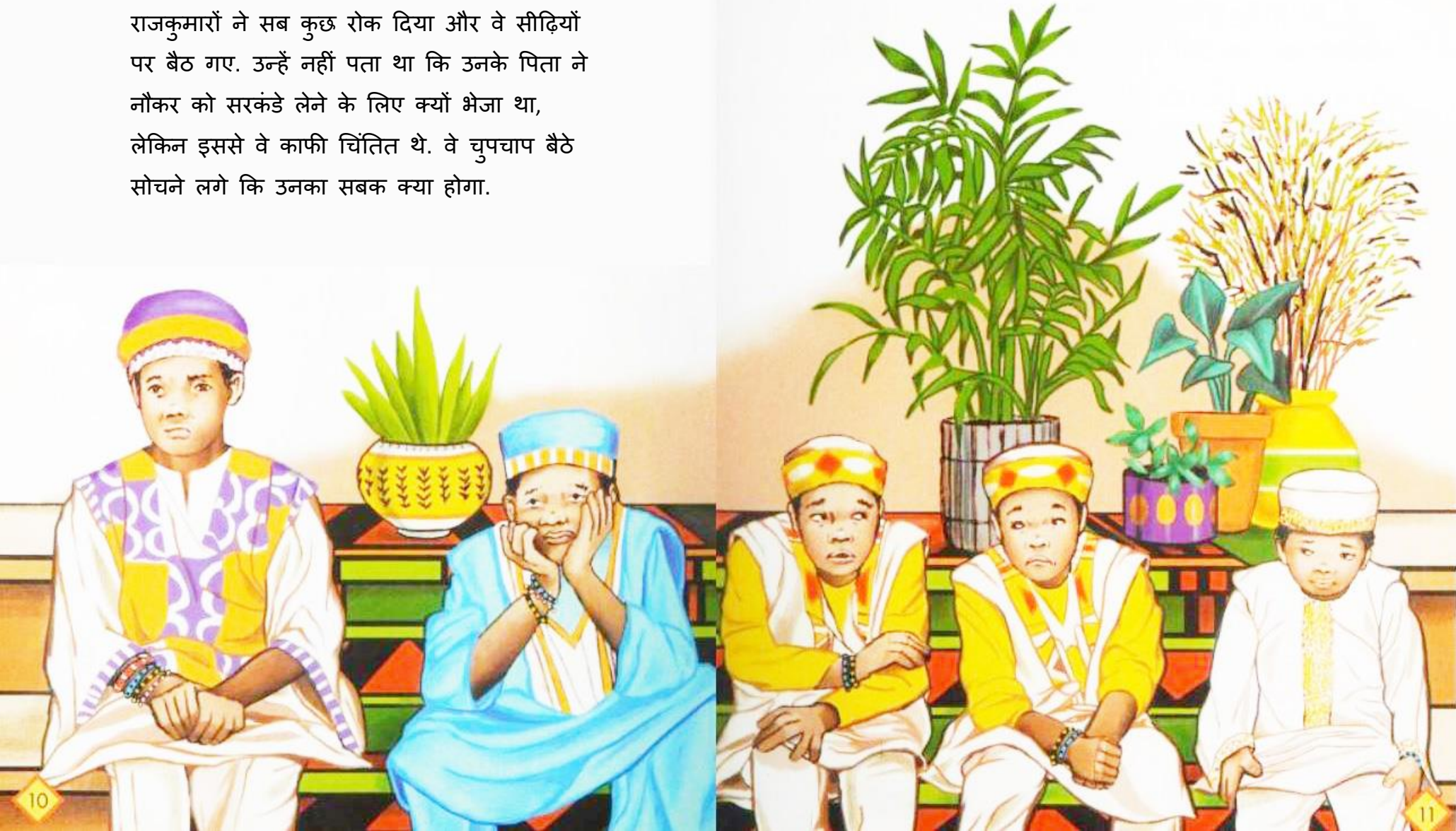

थोड़ी देर बाद नौकर सरकंडे लेकर वापस आया. फिर पांचों राजकुमार अपने पिता के सामने खड़े हुए. राजा दलमार ने सरकंडों को एक कपड़े के टुकड़े से कसकर एक बंडल में बांध दिया.

"अब," राजा दलमार ने पूछा, "तुम में से कौन इन सरकंडो के बंडल को तोड़ सकता है?"

सभी ने गट्ठर को तोड़ने की कोशिश की, लेकिन कोई भी गट्ठर को तोड़ने में सफल नहीं हुआ.

तब राजा ने सरकंडो के बंडल को खोला. उन्होंने प्रत्येक राजकुमार को एक-एक सरकंडा दिया.

"अब जो सरकंडा तुम्हारे पास है उसे तोड़ने की कोशिश करो," राजा दलमार ने कहा.

पांचों राजकुमारों ने अपने-अपने सरकंडों को आसानी से तोड़ दिया.

"तुम सरकंडो के बंडल की तरह हो," राजा दलमार ने समझाया.
"तुम लोग अकेले की तुलना में इकट्ठे अधिक मजबूत होगे.
अगर तुम एक साथ काम करोगे तो तुम अपने हरेक काम में
ज़रूर सफल होगे. ज़रा उसके बारे में सोचो!“

राजकुमारों को अपने पिता की सीख समझ में आई. उसके बाद
भाइयों ने एक साथ मिलकर काम किया और वे बहुत खुश रहे.

समाप्त